24 सितम्बर 2017 को सायं 5.00 बजे इन्दौर में राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा संस्था इन्दौर के तत्वावधान में दिए जाने वाले तेरहवें डॉ. एम.सी. नाहटा राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा पुरस्कार प्रदान किए जाने के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा संस्था इन्दौर के तत्वावधान में दिए जाने वाले तेरहवें डॉ. एम.सी. नाहटा राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा पुरस्कार प्रदान किए जाने के अवसर पर आयोजित इस समारोह में यहाँ आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस अवसर पर सबसे पहले उन सभी नेत्र रोग विशेषज्ञों का अभिनंदन करती हूं जिन्होंने लोगों की जिन्दगी में रोशनी को बनाए रखने एवं उच्च स्तर की नेत्र रक्षण विशिष्टता का उपयोग करते हुए बहुतों के जीवन में प्रत्याशित परिवर्तन लाया है, नेत्र रक्षा की अलख जगाई है और हजारों ऐसे नेत्र रोगियों के लिए ईश्वरीय आशीर्वाद बन गए हैं।

2. ऐसे ही एक नेत्र विशेषज्ञ हुए हैं जिन्हें हम डॉ. एम.सी. नाहटा के नाम से जानते हैं। उन्होंने नेत्र से संबंधित रोगों के विषय में इतनी विशेषज्ञता हासिल की है, जिस मनोयोग से उन्होंने अपने पेशे को धर्म के रूप में अपनाया और लाखों नेत्र रोगियों की सेवा की है, उनकी सर्जरी की है, वह अतुलनीय है। तभी तो पिछले बारह वर्षों से उनके नाम पर नेत्र विशेषज्ञों एवं उनसे जुड़ी संस्थाओं को उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया जा रहा है। इस वर्ष नेत्र विशेषज्ञ डॉ. ए. साईबाबा गौड़ को उनकी कर्मनिष्ठ एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए डॉ. एम.सी. नाहटा पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। उनको बहुत–बहुत

बधाई। आशा करती हूं कि वे इसी प्रकार अपने कर्त्तव्यपथ पर निरंतर चलते रहेंगे और समाज के उन व्यक्तियों के नेत्रों में रोशनी की अलख जगाते रहेंगे।

3. डॉ. माणकचंद नाहटा एक ऐसे कर्मनिष्ठ डॉक्टर हैं जिन्होंने निरंतर नेत्र रोग के इलाज की दिशा में कई innovations पर बल दिया। कम सुविधा से अत्याधुनिक सुविधा में बदलने की इस अवधि में उन्होंने हमेशा इस बात पर ध्यान दिया कि कैसे हम अधिक से अधिक लोगों को नेत्र रोगों के प्रति जागरूक करें एवं समाज में नेत्र स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ाएं। उन्होंने भोपाल मेडिकल कॉलेज में चिकित्सक रहते हुए कई बार नेत्र शिविर आयोजित किए। Retinal Surgery में दक्षता हासिल करने के उद्देश्य से वे अध्ययन हेतु इंग्लैंड भी गए। मोतियाबिन्द के उपचार हेतु उन्होंने इन्दौर में मोतियाबिन्द के उपचार हेतु आंखों के अन्दर लेन्स के प्रत्यारोपण का कार्य प्रारंभ किया। इसी से जुड़ी प्रथम लैजर फोटो कोआगुलेटर मशीन की स्थापना उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम है। Retinal Surgery में दक्षता इनके कठिन परिश्रम का ही परिणाम है।

4. इससे भी आगे बढ़कर, डॉ. नाहटा ने एम.वाई अस्पताल में पहला लो–विजन केन्द्र स्थापित किया, जो आज भी नेत्र रोगियों के सेवार्थ उपयोग में लाया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर पुणे में आयोजित अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ के तत्वावधान में आयोजित की गई थी जिस पर मायोपिया की गंभीर समस्या पर चर्चा की गई थी। डॉ.

नाहटा ने इसके लिए अलग विचार रखा था जो बाद में अंतर्राष्ट्रीय नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में एजेंडा बनकर उभरी। भोपाल की गैस त्रासदी के दौरान नेत्र रक्षा में उनका योगदान उत्कृष्ट रहा है। उन्होंने रेटिना के डिटैचमेंट पर श्रेष्ठतम क्लिनिकल कार्य किया है। साथ ही विशेष उपकरण ''फोकोमीटर'' द्वारा चश्मे का नम्बर निकालने का कार्य प्रारंभ किया जिससे गंजबसौदा ब्लॉक की लाखों आबादी को फायदा मिला है। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मानित करने के उद्देश्य से ही इस पुरस्कार की स्थापना हुई है।

5. राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा केन्द्र इन्दौर द्वारा उनके नाम पर स्थापित इस पुरस्कार के पीछे का उद्देश्य उनके जैसे कर्त्तव्यपरायण एवं कर्मठ नेत्र चिकित्सक का सम्मान करना एवं इससे बढ़कर उन्हें समाज में प्रतिष्ठित करना है जो ऐसे पुनीत कार्यों में लगे हैं।

6. मित्रो! इस नेत्र सुरक्षा केन्द्र का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों की आंखों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है तथा यह प्रबंध भी करना है कि अधिक से अधिक लोगों के आंखों की रोशनी को जहां तक संभव हो, रक्षा किया जाए। इसके लिए समस्त नेत्र चिकित्सकों का सहयोग, दूरदर्शिता, कड़ी मेहनत और वचनबद्धता आवश्यक है।

7. हम सब अवगत हैं कि गरीबों और समाज के वंचित वर्गों के लोगों को कम लागत पर या जरूरत पड़ने पर निःशुल्क और बहुत अच्छी नेत्र देखभाल सेवा नहीं मिल पाती है। ऐसे जरूरतमंद लोगों के लिए नेत्र से संबंधित इलाज की उत्तम व्यवस्था करना सभी बुद्धिजीवी व्यक्तियों का कर्त्तव्य है। हम सब जानते हैं कि आँखें हमारी सबसे महत्वपूर्ण ज्ञानेंद्रियां हैं और सक्रिय जीवन जीने के लिए आँखों का ठीक होना

बहुत जरूरी है। ये हमारे लिए कुदरत की अनुपम नेमत हैं जो हमें ईश्वरीय रचना को, इस अद्भुत संसार को देखने में मदद करता है। हम दुनिया के रंग एवं उनके विभिन्न भाव को देखकर समझ जाते हैं। जो एक झलक में दिखता है उसका वर्णन सौ वाक्यों में भी नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, The eyes are the window of the soul.

8. एक आंकड़े के अनुसार हमारे देश में दृष्टि बाधित या नेत्र रोग से बहुत से लोग पीड़ित हैं। एक सर्वे के अनुसार विश्व के 37 मिलियन लोग दृष्टिबाधित (visually impaired) हैं जिनमें से 15 मिलियन केवल भारत में हैं। इनमें से 75 प्रतिशत ऐसे व्यक्ति हैं जो सही समय पर इलाज न मिलने के कारण आज दृष्टिहीनता के शिकार हो गए हैं। शायद यही कसक डॉ. एम.सी. नाहटा की प्रेरणा बनी हो। आज के परिप्रेक्ष्य में हमें लगभग 40,000 नेत्रदृष्टि जांचने वाले (Optometrists) की आवश्यकता है जबकि वर्तमान में नेत्रदृष्टि जांचने वाले प्रशिक्षित लोगों की संख्या सिर्फ 8000 हैं। नेत्र विशेषज्ञ कम होने से उन पर कार्यभार ज्यादा है और समय पर नेत्र रोगियों का ऑपरेशन नहीं हो पाता है। National Programme for Control of Blindness के अनुसार अभी तक भारत में 1.5 प्रतिशत लोग दृष्टिहीनता से पीड़ित हैं, इसको सन् 2020 तक 0.3 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है।

9. **ऋग्वेद (10–158) में नेत्र के विषय में यह कहा गया है:–**

''चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः।

चक्षुर्धाता दधातु नः। चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे

चक्षुर्विख्ये तनूच्यः। संचेदं विच पश्येम।''

(Sun is supposed to give energy and life to the entire planet and strength to eyes. This prayer is for relief from eye diseases and for attaining brilliant vision. It's reading /chanting alone is sufficient. The vision is enhanced and eyes become brilliant. The prayer is addressed to Lord Surya and it is prayed that by relieving me from my own bad karma from the past life, instill light in my eyes and cure all my eye diseases.)

10. हमारे भारतीय वांगमय में भी दृष्टि (नेत्रों) और उनकी महत्ता पर विचार हुआ है। कृष्ण यजुर्वेदीय उपनिषद् चाक्षुषोपनिषद् में ऋषि अहिर्बुध्य ने इसका वर्णन किया है और इसके गायत्री छन्द में नेत्रों की बीमारियों के निदान के उपाय भी बताएं हैं। इसकी प्राथमिकता के आधार पर देखभाल की जानी चाहिए।

11. इस बात से हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे शहर इन्दौर में ऐसे संस्थाएं हैं और बन रहीं हैं जो यहां के लोगों के परोपकारी स्वभाव को दर्शाती है। मानव जीवन बड़े पुण्यों से मिलता है और परोपकार हमें सच्ची शांति देता है। यह बहुत सच्चा

सुख और आनन्द है। परोपकारी व्यक्ति के लिए संसार कुटुम्ब बन जाता है और 'वसुधैव कुटुम्बमकम्' की हमारी भावना को प्रगाढ़ता मिलती है।

''आत्मार्थं जीवन लोके अस्मिन् को न जीवति मानवः

परं परोपकार्थं यो जीवति, सः जीवति।।''

(इस जीवलोक में अपने लिए कौन नहीं जीता? परंतु जो परोपकार के लिए जीता है, वही सच्चा जीवन है).

12. मित्रो, डॉ. ए. साई बाबा गौड़ ने नेत्र की रोशनी की रक्षा एवं कैसे दृष्टिहीनता से निपटा जाए, इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया है और समाज में लोगों को नेत्र की देखभाल के प्रति संवेदनशील बनाया है। मुझे विश्वास है कि वे भविष्य में भी निरंतर नेत्र रक्षा के पावन कार्य में लगे रहेंगे और अधिकाधिक लोगों को नेत्र से संबंधित बीमारियों से मुक्त रहने के उपायों को बताते रहेंगे एवं नवीन एवं innovative modern technology का उपयोग करते हुए अधिकाधिक लोगों की नेत्र चिकित्सा प्रदान कर उन्हें प्रकृति की खूबसूरती का आनंद लेने में सहयोगी बनते रहेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार पुनः डॉ. ए. साईबाबा गौड़ को ''डॉ. एम.सी. नाहटा पुरस्कार'' प्राप्त करने पर बधाई देते हुए अपनी बात को समाप्त करती हूं।

धन्यवाद।

———